पंच गौरव

जिला खैरथल-तिजारा

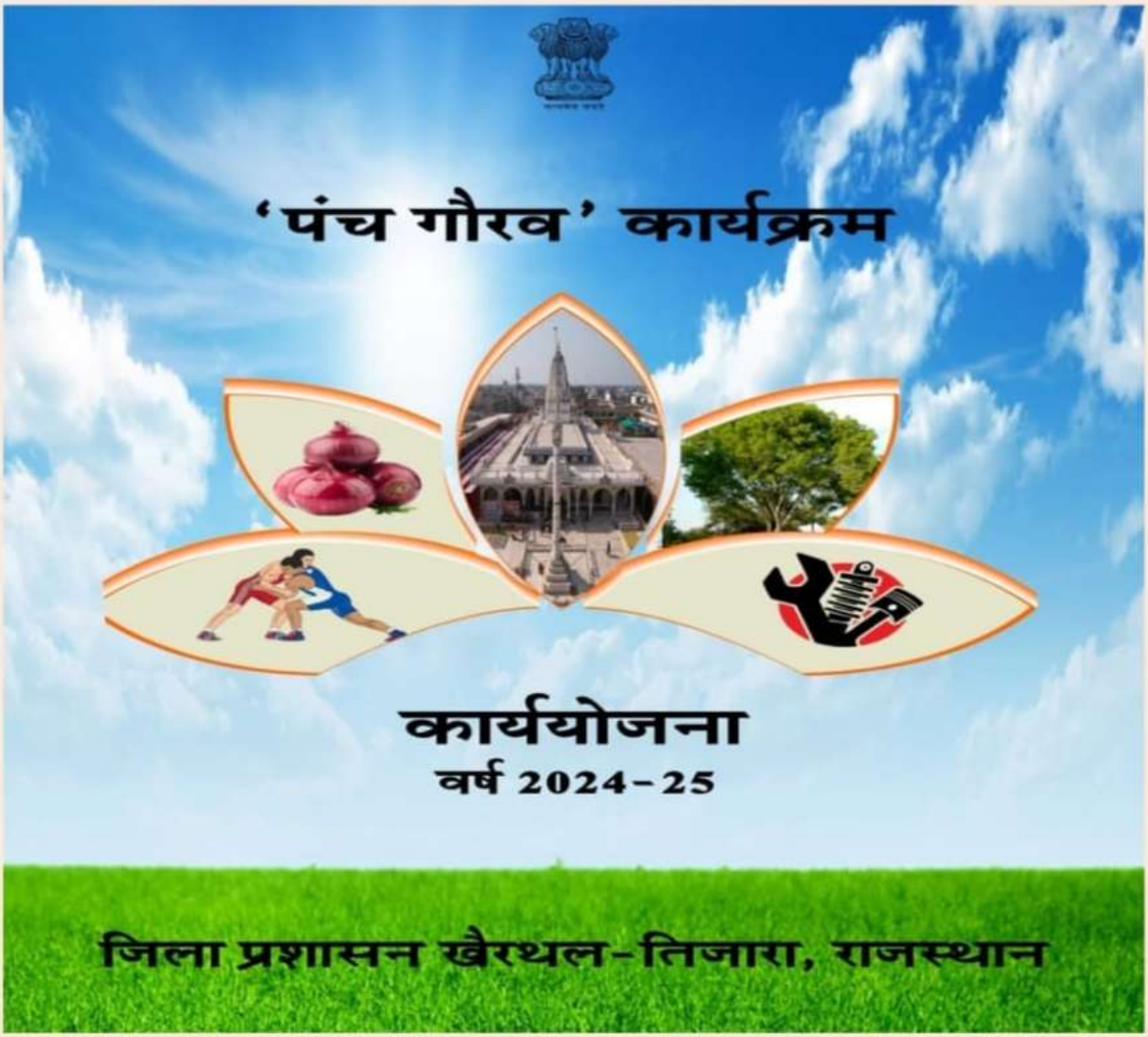

राजस्थान सरकार की नवीन नीतियों का अनावरण

आपणो अगणी
राजस्थान

मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच–गौरव कार्यक्रम की शुरूआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में **पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित** किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच–गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हूं।

(भजन लाल शर्मा)

विषय सूची

- प्रस्तावना
- कार्यक्रम के उद्देश्य
- एक जिला एक उपज
- एक जिला एक खेल
- एक जिला एक उत्पाद
- एक जिला एक प्रजाति

प्रस्तावना

खैरथल-तिजारा जिले की भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहां अलग-अलग तरह की उपज पैदा होती हैं एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियां पाई जाती हैं। इसी प्रकार जिले में अलग-अलग प्रकार के औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। पर्यटन की दृष्टि से भी जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पयर्टन आदि प्रमुख स्थल मौजूद है। जिले में विभिन्न खेल गतिविधियां भी प्रमुख पहचान रही हैं।

जिले के सर्वांगीण विकास को दृष्टिकोण रखते हुए जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विषिष्टता के आधार पर उत्पादों/ स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती हैं।

जिलों में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में पंच-गौरव कार्यक्रम शुरू किया जा रहा हैं।

कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के खैरथल-तिजारा जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए पंच-गौरव के रूप में एक जिला-एक उत्पाद, एक जिला-एक उपज, एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला - एक खेल एवं एक जिला - एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गए हैं।

जिला स्तर पर चयनित पंच-गौरव के संवर्धन एवं विकास हेतु एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार की गई है।

कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय ल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिले में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिले से प्रवास को रोकना।
- जिले के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैष्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- जिले में समान विकास को बढ़ावा देकर विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

एक जिला एक उपज

प्याज

एक जिला एक उपज – प्याज

एक जिला एक उपज (ODOP)-प्याज (खैरथल जिले का गौरव)

खैरथल जिले में प्याज का सब्जियों में महत्त्वपूर्ण स्थान है यह फसल प्रमुख रूप से बीज द्वारा पौध तैयार कर लगाई जाती है। किन्तु खैरथल जिले में खरीफ प्याज (अगस्त माह के प्रथम सप्ताह से सितंबर माह तक) की बुवाई जायद में (फरवरी-मई) तैयार की गई गंठियों (बल्ब) से की जाती है। जिले में प्याज की खेती हेतु मुख्यतः एन.एच.आर.डी.एफ रेड़, नासिक रेड़, एग्री फाउंड रेड़ व एग्री फाउंड रोज किस्मों का उपयोग किया जाता है। प्याज की अच्छी उपज लेने के लिए प्रति हैक्टर 15-20 क्विंटल (2-2.5 सेमी० आकार) गंठियों की आवश्यकता रहती है। जिले में किसानों द्वारा उत्पादित लाल प्याज की आवक मंड़ियों में अक्टूबर से दिसंबर माह तक रहती है। जिसकी मांग राजस्थान के साथ-साथ अन्य पड़ोसी राज्यों यथा पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश सहित पड़ोसी देशों यथा पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान सहित अरब देशों में भी रहती है

जिले में प्याज की खेती मुख्यतः खैरथल, कोटकासिम, हरसौली, तिजारा, किषनगढबास व मुण्डावर तहसील क्षेत्र में की जाती है। वर्तमान में प्रतिवर्ष जिले में 10 से 12 हजार हैक्टर क्षेत्रफल में प्याज की खेती की जाती है। जिले में लगभग 15-20 हजार किसान प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्याज की खेती से जुड़े हुए हैं। इस वर्ष खरीफ सीजन में जिले में लगभग 12100 हैक्टर क्षेत्रफल में प्याज की खेती की गई है। जिले में प्याज की औसतन पैदावार 180 से 200 क्विंटल प्रति हैक्टर होती है। खैरथल जिले के साथ-साथ समीपवर्ती अलवर जिले में भी प्याज की खेती प्रमुख रूप से की जाती है। जिलेमें पुर्नगठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना के तहत प्याज फसल चयनित है। भारत सरकार के खाद प्रसंकरण उद्योग मंत्रालय द्वारा खैरथल जिले हेतु प्याज फसल को एक जिला एक उत्पाद में पी.एम.एफ.एम.ई. (PMFME) योजना के तहत अनुमोदित किया गया है।

प्याज का उपयोग मुख्य रूप से सब्जियों एवं सलाद में किया जाता है किंतु इसके साथ ही प्रसंस्करण उपरांत प्याज से ड्रिहाइडेटेड़ प्याज पाउडर (Onion Powder), डिहाइड्रेटेड़ प्याज फ्लैक्स (Onion Flakes) प्याज ज्यूस (Onion Juice), प्याज ऑइल (Onion Oil), प्याजपेस्ट (Onion Paste), प्याज आधारित पशुचारा (Onion Based Animal Feed) आदि उप उत्पाद प्राप्त किये जा सकतेहैं। स्थानीय बाजार में प्रसंस्करण उपरांत प्राप्त प्याज उप उत्पादों की माँग होने पर प्रसंस्करण ईकाई की संस्थापना की संभावनाएं हो सकती है।

प्याज उत्पादन एवं किसान आय में वृद्धि हेतु निम्न गतिविधियां की जा सकती है

- प्याज उत्पादन हेतु नवीन अनुसंधान एवं आधुनिक तकनीकों के विकास हेतु उत्कृष्टता केंद्र एवं अनुसंधान संस्थान स्थापित करवाना। (To establish Centre of Excellence and Research Institute for development of new research and modern techniques for onion production)
- बुवाई हेतु उन्नत बीज/बल्ब उपलब्ध करवाना। (Providing improved seeds/bulbs for sowing)
- कटाई के पश्चात् प्याज भंडारण हेतु संरचना बनवाना। (Construction of structure for storing onions after harvesting)
- किसानों, शोधकत्र्ताओं और उद्योग हितधारकों के लिए प्रशिक्षण, ज्ञानप्रसार एवं क्षमता निर्माण करवाना। (Providing training, knowledge dissemination and capacity building for farmers, researchers and industry stakeholders)
- देश में स्थित प्याज संबंधित विभिन्न अनुसंधान संस्थानों में कृषकों एव ंहितधारकों को भ्रमण करवाकर उच्च उत्पादन तकनीकों से अवगत करवाना। (To make farmers and stakeholders aware of high production techniques by organizing tours to various onion related research institutes located in the country)

एक जिला एक खेल

कुश्ती

एक जिला एक खेल : कुश्ती

कुश्ती एक ओलंपिक खेल है। यह प्राचीन खेल है। भारत में सर्वाधिक मैडल ओलंपिक खेल कुश्ती के है। यहा तक कि यह खेल महिलाओं में भी खेला जाता है। महिला व पुरूष दो वर्गो में है। 10 वर्ग वजन होते महिलाओं की केवल फ्री स्टाईल कुश्ती होती है। पुरूष वर्ग में फ्री व ग्रीको दोनो स्टाईल की कुश्ती होती है।

यह महिलाओं के लिये इस लिये भी आवश्यक है। आत्मरक्षा का खेल है। आज सर्वाधिक महिला खेलों के द्वारा भारत में अपना भविष्य बना रही है। भारत में सर्वाधिक कुश्ती हरियाणा,दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेष, महाराष्ट्र, राजस्थान में है और राजस्थान में सर्वाधिक कुश्ती का गढ़ भरतपुर,अलवर मेवात, भीलवाडा, खैरथल-तिजारा जैसे कुश्ती का कल्चर है।

सेन्टर:- इसी प्रकार पंचगौरव के तहत कुश्ती के क्षेत्र में खैरथल-तिजारा जिले के प्रत्येक ब्लॉक पर सेन्टर खोले जाने है।

एक खेल एक जिला:- पंचगौरव के तहत खैरथल-तिजारा जिले में कुश्ती का मुख्य प्रशिक्षण केन्द्र खोला जावेगा।

खैरथल-तिजारा में रहने की व्यवस्था:- वर्तमान में अलवर में बन रहे स्वामी विवेकानंद होस्टल अम्बेडकर नगर की तर्ज पर 100 वेड की क्षमता का होस्टल बनाया जावें ताकि बालिकाओं के रहने की व्यवस्था होने से यहां परिक्षण लेने में आसानी रहेगी।

कुश्ती हाल:- वर्तमान में इंदिरा गाँधी स्टेडियम,अलवर की तर्ज पर मल्टी परपज हाल बनाया जाना है।

ब्लॉक स्तर पर कुश्ती ट्रैनिंग शुरू:- प्रत्येक ब्लॉक से एक पी.टी.आई. जो थोडा बहुत ज्ञान कुश्ती का रखते है। सभी को 15 दिन या एक माह की स्वंय कोचिंग खैरथल-तिजारा सेन्टर पर, नियमों की जानकारी, टेकनिक का अभ्यास कराया जावें। यह एडंवास कोर्स के तहत सिखाया जावें। उसके बाद इन्हे अपने ब्लॉक पर चिन्हित स्कूलों पर अभ्यास देने के लिये आदेश हो जावें। एक साल का प्लान लेना होगा।

आयु:- स्कूल में कक्षा पांच के बाद कुश्ती शुरू कर दी जावें जब तक कक्षा 12 में आयेगें नेशनल मैडल देने लगेगें।

खैरथल-तिजारा सेन्टर:- खैरथल-तिजारा कुश्ती का हब बनाया जावें। जिसमें 50 लडके व 50 लडकियों को अभ्यास एक साथ कराया जावें जितना ज्यादा बच्चे उतना ज्यादा परिणाम।

शिक्षा:- अकेडमी में रहना खाना किट सामग्री व इनकी षिक्षा साथ ही यातायात व्यवस्था व प्रतियोगिता टी.ए. देने की व्यवस्था राज्य सरकार वहन करती आ रही है। खेलो में चिकित्सा संबंधी व्यवस्था तक राज्य सरकार वहन करती आ रही है। अन्य जिलो की अकेडमीयों को दे रही है। वही लागू किया जावें।

कुश्ती हाल, सोनावाथ, स्टीमवाथ, फिजियों इत्यादि भी व्यवस्था अकेडमीयों को दी जावें।

लाभ:- यदि वर्ष 2025-26 से लागू करते है। यदि यह अकेडमी खैरथल-तिजारा के अन्दर छोटे नर्सरी बच्चों को लेकर चलते है। 2036 तक खैरथल-तिजारा अकेडमी भविष्य में ओलंपिक खिलाडी खैरथल-तिजारा देगा।

सबसे बडी बात प्रतिदिन बच्चियों के साथ बलात्कार जैसी घटनाये हो रही है सरकार चिन्ता कर रही है। उनके लिये आत्मरक्षा की काफी योजना चला रखी है। यह अकेडमी आत्मरक्षा की मिशाल देगा एवं भारत की बालिका मजबूत होगी तो राष्ट्रीय मजबूत होगी। आज नारी हर क्षेत्र में आगे है। बल से दिमाग से नारी अपने भारत का गौरव बनेगी।

ब्लॉक स्तर पर ट्रेनिंग:- ब्लॉक स्तर पर कुश्ती के अभ्यास वाले पीटीआई सुबह प्रार्थना के बाद एक दो घण्टा बालक-बालिकाओं को कुष्ती आवष्यक सिखानी होगी। इस प्रकार उसकी ट्रेनिंग अभ्यास कराया जावें। लेसन/चैप्टर प्लान बनाकर सिखाया जावें।

परिणाम:-राज्य सरकार द्वारा कुछ साल पहले बालिकाओं की कुश्ती स्कूल स्तर पर शुरू हुई है। उन्हे अब स्कूल स्तर से खेलने को प्रतियोगिता मिलेगी। राज्य स्तर,नेशनल, अन्तरराष्ट्रीय, ऐशिया, वर्ल्ड, ओलंपिक का सपना पूरा होगा।

कैरियर:- मैडल लाने पर राज्य सरकार में नौकरी के अवसर है।

अखाडा अडोपट करना:- अखाडा गोद लेना (कुश्ती अखाडा गोद चिन्हित) यह भारत सरकार की योजना है। प्रत्येक ब्लॉक स्तर का एक स्कूल गोद लेने से वहां सामग्री, कोच, गददे, बडा मैट नही तो छोटा मैट दिया जाता है जैसे हरियाणा के स्कूल में कुश्ती के छोटे मैट दिये गये है।

खैरथल-तिजारा जिले में प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर योजना के तहत अखाडा गोद लेना, जिम, छोटा मैट दिया जाने से खेल में गति आ जावेगी।

खेलो इंण्डिया:- खेलो इंडिया के तहत प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर सामग्री दी जाये तो खेलो को बढावा मिलेगा।

लोकल नेता या जन प्रतिनिधित्व:- कुश्ती का खेल लोकप्रिय खेल है। यह खैरथल-तिजारा की नस-नस में है। ज्यादा मंहगा समान भी नही आता उनके गददे की व्यवस्था लोकल नेता या जन प्रतिनिधित्व द्वारा स्कूल को दिये जावें।

मिटटी के अखाडे:- आज भी मिटटी के अखाडे प्रत्येक ग्राम में स्वंय के स्तर चलाये जा रहे है। उनको भी गददो पर सुविधा दी जावे तो खेल निखर सकते है।

यह प्लान एक साल लागू किया जावे उसके परिणाम देखें? क्या सुधार करने होगें यह देखें?

प्लान प्रोजेक्ट (बडा)

खैरथल-तिजारा कुश्ती अकेडमी:-

- कुश्ती का हाल बनवाया जावें।
- कुश्ती का मैट कम से कम 3 सैट मैट
- सोनावाथ, स्टीमवाथ, जिम, ट्रेनिंग सामग्री इत्यादि।
- रहने के लिये वातानुकूलित कमरे 100
- अच्छा स्वस्थ आहार दिया जावें।
- फिजियोथेरेपिस्ट सेन्टर चोट निवारण।
- मनोवैज्ञानिक सेन्टर
- शिक्षा फ्री।
- आने जाने की व्यवस्था।
- कीट व्यवस्था।
- एक अनुभवी कोच, सपोटिंग स्टाफ
- आधुनिक ट्रैनिंग सामग्री।
- सौर उर्जा प्लान।

बच्चे खेले, पढे एवं खाना, खा कर सोना/आराम करना फिर दुबारा खेले साथ ही अन्य गतिविधियों से दूर रहे केवल खेल पर ही फोकस करें तब जाकर खेल अकेडमी होगी। खैरथल-तिजारा दिल्ली के पास है। यह अकेडमी भविष्य की सबसे अच्छे खिलाडी देने वाली अकेडमी बनेगी।

इनकी आयु पर भी विशेष ध्यान दिया जावे,छोटी आयु के बच्चों को ट्रैनिंग दी जायेगी तब कही जाकर सपना पूरा होगा। पंच गौरव का खैरथल-तिजारा जिले के प्रत्येक ब्लाक स्तर में सेन्टर चिन्हित करके अभ्यास शुरू कराया जायें।

खैरथल-तिजारा ट्रैनिंग सेन्टर (मुख्य होगा)

प्रत्येक ब्लाक सें पी.टी.आई को सिखाये (कुश्ती सीखाकर वापिस भेजें)

ये लोग प्रत्येक ब्लाक स्तर पर अभ्यास देवें।

कम से कम एक साल तक दो घण्टे कुष्ती खेल पीरियड बनाया जावें।

कम आयु वाले बच्चों को अभ्यास कराने हेतु

IRANA 2025

शिखर तक

एक जिला एक उत्पाद

ऑटो पार्ट्स

एक जिला एक उत्पाद : ऑटोपार्ट्स

राज्य सरकार द्वारा सभी जिलों के पंचमुखी विकास के लिए पंच गौरव कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इस कार्यक्रम में प्रत्येक जिले के पांच तत्वों पर ध्यान केन्द्रित किया जाना है। इन पाँच तत्वों में उद्योग एवं वाणिज्य विभाग से संबंधित खैरथल-तिजारा जिले में एक जिला-एक उत्पाद के रूप में ऑटो कम्पोनेंट का चयन किया गया है। जिले में भिवाड़ी फेज 1&4, रामपुर मुंडाना, कहरानी, शहाडोंद, चैपानकी, खुशखेड़ा, पथरेड़ी, सारेखुर्द, बंदापुर, सलारपुर, कारोली, टपूकड़ा, खैरथल, औद्योगिक क्षेत्र में लगभग 400 ऑटो कम्पोनेंट की इकाईयां उत्पादन से जुड़ी हुई है। इन इकाईयों में लगभग 50000 (पच्चास हजार) लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलता है। इन इकाईयों द्वारा कार, स्कूटर, मोटरसाईकिल, इंजन वाल्व, पिस्टन, सस्पेंशन, गियर, इंजन बॉडी, स्पार्क प्लग, रेडियेटरर्स, प्लास्टिक एवं रबड़ उत्पाद आदि का निर्माण किया जाता है। खैरथल-तिजारा जिले में मुख्य रूप से होण्डा स्कूटर एण्ड मोटरसाईकिल प्रा. लि., होण्डा कार इंडिया लि., श्रीराम पिस्टन एण्ड रिंग लि., हाईटेक गियर लि., युटाका ऑटो पार्टस इंडिया प्रा. लि., बालकृष्ण इंडस्ट्रिज लि., ग्लोबल ऑटो पार्टस एलायंस, बेस्टैक एमएम इंडिया प्रा. लि., बैक्सी लि., एएफटी ऑटोमोटिव, सीएमटी हाइड्रो, मित्तल फोरजिंग, संतोष इंजिनियरिंग कम्पनी, एरोकोच प्रा. लि. आदि इकाईयां ऑटो कम्पोनेंट का उत्पादन कर रही है। इन इकाईयों द्वारा मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, यू.के., यूएई, जापान, जर्मनी, रूस, अफ्रिकी संघ आदि देशो में निर्यात किया जा रहा है।जिले में इस सेक्टर में आधारभूत सुविधाओं व विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध होने से ऑटोकम्पोनेन्ट्स की गुणवत्ता, उत्पादकता वृद्धि के साथ रोजगार, निवेश एवं निर्यात में गुणात्मक वृद्धि होगी एवं सरकार के राजस्व में भी वृद्धि संभव है।

ODOP Policy – 2024

उद्देश्य:-

- ओडीओपी उत्पाद के लिए प्रत्येक जिले को निर्यात हब के रूप में विकसित करना।
- ओडीओपी उत्पाद की गुणवत्ता, डिजाईन एवं विपणन में सुधार लाना।

- ओडीओपी से संबंधित उत्पादकों हेतु रोजगार सृजन, कौशल प्रशिक्षण, निर्यात सम्वर्द्धन, आरएनडी तथा हैण्ड होल्डिंग सपोर्ट प्रदान करना।

ओडीओपीनीति की परिचालन अवधि : योजना दिनांक 31 मार्च 2029 तक प्रभावी रहेगी।

नीति के तहत देय सहायता एवं सुविधाए:-

- नवीन ओडीओपी उद्यम हेतु मार्जिन मनी अनुदान (ऋण लेने पर)
- सुक्ष्म (माइक्रो) उद्यम - परियोजना लागत का 25 प्रतिषत या अधिकतम रू 15 लाख
- लघु (स्माल) उद्यम - परियोजना लागत का 15 प्रतिषत या अधिकतम रू. 20 लाख
- एससी/एसटी/महिला/दिव्यांग/35 वर्ष से कम आयु के युवा उद्यमीयों को नवीन सूक्ष्म अथवा लघु ओडीओपी उद्यम की स्थापना पर अधिकतम रू 5 लाख तक अतिरिक्त लाभ देय है।

- नवीनतम तकनीक/सॉफ्टवेयर अभिग्रहण पर - कुल अभिग्रहण लागत का 50 प्रतिषत या अधिकतम रू. 5 लाख तक की वित्तीय सहायता।
- गुणवत्ता प्रमाणन सहायता - कुल लागत का 75 प्रतिषत या अधिकतम रू. 3 लाख तक एक बारीय पुर्नभरण।

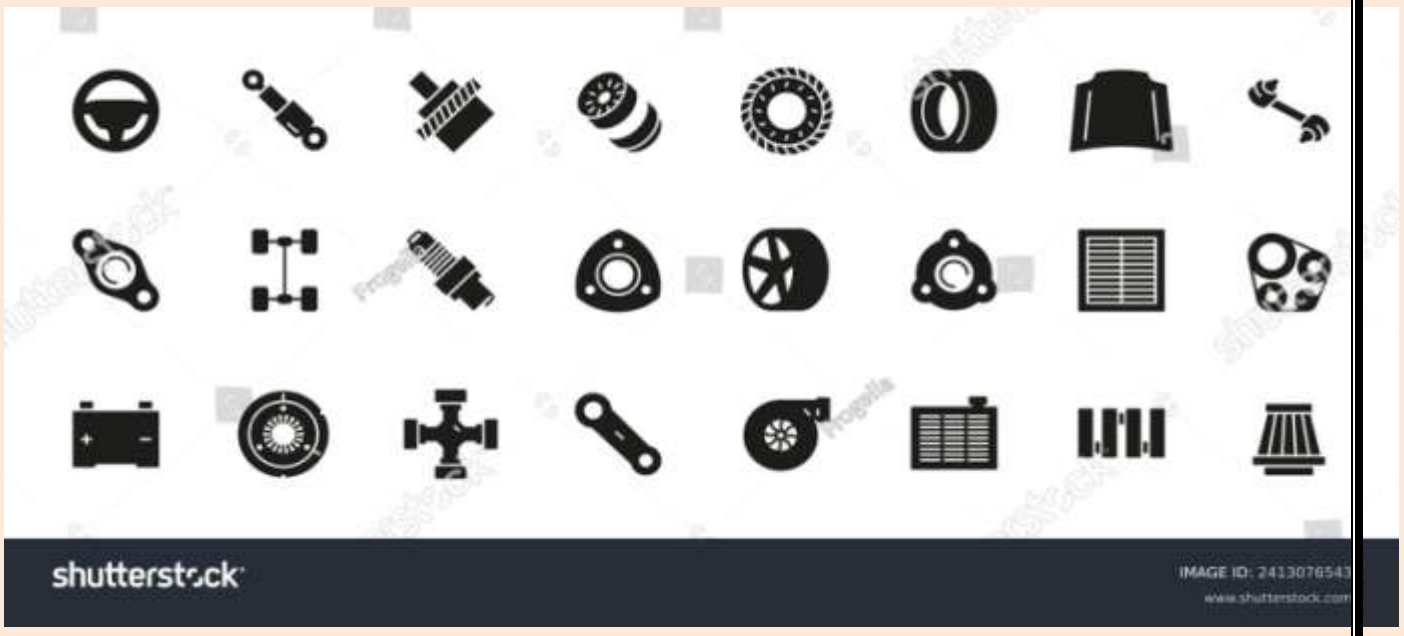

मार्केटिंग हेतु वित्तीय सहायता

- राज्य में आयोजित राष्ट्रीय/अन्तराष्ट्रीय मेलों तथा प्रदर्षनी में भाग लेने पर-
- स्टाल किराये का 75 प्रतिषत या अधिकतम रू. 50 हजार तक पुर्नभरण।
- बस (एसी)/रेल (एसी) का किराया।
- राज्य के बाहर देश में आयोजित राष्ट्रीय/ अन्तराष्ट्रीय मेलों तथा प्रदर्षनी में भाग लेने पर - स्टाल किराये का 75 प्रतिषत या अधिकतम रू. 1.50 लाख तक पुर्नभरण।
- बस (एसी)/रेल (एसी) का किराया।

- विदेश में आयोजित मेलों तथा प्रदर्षनी में भाग लेने पर स्टाॅल किराये का 75 प्रतिशत या अधिकतम रू. 2 लाख तक पुर्नभरण।
- हवाई यात्रा का किराया।

ई-कॉमर्स हेतु प्रोत्साहनः-

- ई-कॉमर्स प्लेटफार्म द्वारा वसुली गई फीस/कमीशन का 75 प्रतिशत या अधिकतम रू. 1 लाख तक पुर्नभरण।
- ई-कॉमर्स वेबसाईट का विकास या कैटालौगिंग सर्विस हेतु व्यय का 60 प्रतिशत या अधिकतम रू. 75 हजार एक बारीय सहायता।

अन्य प्रावधान:-

- कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- दस्तकारों/हस्तषिल्पियों/उद्यमियों को पैकेजिंग प्रषिक्षण।
- राजस्थान ओडीओपी एक्सपों का आयोजन।
- पीएम एकता मॉल एवं ओडीओपी डिस्प्ले वाल्स के माध्यम से ओडीओपी उत्पादों का प्रचार।
- विपणन एवं निर्यात एक्सीलैंस केन्द्र की स्थापना।
- ब्राण्ड राजस्थान पहल।
- रिप्स - 2024 के तहत अन्य सुविधाएं।

shutterstock

gettyimages
Credit: Bloomberg
484174527

एक जिला-एक पर्यटन स्थल

तिजारा का जैन मन्दिर

एक जिला-एक पर्यटन स्थल: तिजारा जैन मन्दिर

संक्षिप्त परिचयः- खैरथल-तिजारा जिले में स्थित तिजारा जैन मन्दिर अपने धार्मिक महत्व के कारण विषिष्ट स्थान रखता है। यह मन्दिर जिलें की तिजारा तहसील में स्थित है और खैरथल से 27 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। तिजारा जैन मन्दिर आठवें तीर्थकर चंन्द्रप्रभु को समर्पित है। इस जैन मन्दिर का इतिहास वर्ष 1956 का है जब एक खुदाई के दौरान मन्दिर की मुख्य मुर्ति प्राप्त हुयी थी। के मुख्य देवता की मूर्ति की उत्पत्ति हुई थी। यह सम्पूर्ण क्षेत्र अतिशय क्षेत्र के रूप् में जाना जाता है। सफेद सगमरमर की पदमासन् मुद्रा में श्री चन्द्ररप्रभु जी की 15 इंच लम्बी मूर्ति विलक्षण व अलौकिक प्रतित होती है। तिजारा जैन मन्दिर जन आस्था का प्रमुख केन्द्र है। जहाँ प्रति वर्ष काफी संख्या में दर्शनार्थी आते है।

कार्य योजना

तिजारा जैनमन्दिर का क्रियान्वयन मन्दिर ट्रस्ट एवं पर्यटन विभाग के समन्वय से किया जाना प्रस्तावित है। तिजारा जैन मन्दिर में पर्यटकों की सुविधा बढावा देने हेतु विभिन्न विकास कार्य करवाए जा सकते है जिनमें से प्रमुख हैः-

प्रमुख विकासकार्यः-

प्रवेश द्वार

- किशनगढबास से भिवाडी व भिवाडी से किशनगढबास मेगा हाइवे से तिजारा में प्रवेश करने वाले मार्ग पर भव्य प्रवेश द्वार बनाया जाकर प्रवेष को अधिक आकर्षक बनाया जाना।
- तिजारा कस्बे से जैन मन्दिर की तरफ जाने वाले मार्ग पर भव्य प्रवेश द्वारा का निर्माण।
- तिजारा मे स्थित अंहिसा सर्किल सौन्द्रर्यकरण कार्य।

साफ-सफाई एवं कचरा प्रबंधन

- मंदिर के प्रमुख स्थानों पर कचरा पात्र व्यवस्था

साइनेज सिस्टम

- हिन्दी एवं अंग्रेजी में मन्दिर की जानकारी वाले साइनबोर्ड।
- आगन्तुको के मार्गदर्षन हेतु स्पष्ट दिषा सूचक बोर्ड।
- आपातकालीन सम्पर्क जानकारी एवं निर्देष संकेतक।

सौन्द्रर्यकरण एवं अन्य पर्यटक सुविधा कार्य

- तिजारा स्थित अंहिसा सर्किल से बिजली घर चैराहा तक मार्ग पर बने डिवाइडर पर पौधा रोपण, लाईटिंग एवं सौन्द्रर्यकरण कार्य।
- पर्यटक केन्द्र बनाने की दिषा मे महत्वपूर्ण कदम होगा।
- सीटिंग बेन्चेज व्यवस्था।

प्रस्तावित लाभः-

- पंच गौरव के अन्तर्गत खैरथल-तिजारा कस्बे की पहचान के रूप् में तिजारा जैन मन्दिर के लिए विकास कार्य करवाये जाने से पर्यटकों द्वारा सुविधाजनक भ्रमण किया जा सकेगा।
- यह योजना तिजारा जैन मन्दिर को उत्कृष्ट धार्मिक पर्यटन केन्द्र बनाने की दिषा में महत्वपूर्ण रहेगा।
- स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजन किया जा सकेगा।

एक जिला एक प्रजाति

शीशम

एक जिला-एक प्रजाति –शीशम

खैरथल-तिजारा जिले में शीशम (*Dalbergia sissoo*) को *"पंच-गौरव"* हेतु चयन किया गया है। यह बहुपयोगी वृक्ष जिले के कृषि क्षेत्रों, सड़क किनारों, गोचर एवं धार्मिक स्थलों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसकी पत्तियाँ औषधीय गुणों से भरपूर हैं। शाखाएँ खेतों की बाड़ एवं ईंधन के रूप में प्रयोग होती हैं, तथा इसका मजबूत तना ग्रामीण क्षेत्रों में टिम्बर के रूप में उपयोग किया जाता है। इस वृक्ष की टिम्बर से बहुकीमती फर्नीचर, दरवाजे व खिडकियों का निर्माण किया जाता है। *"पंच-गौरव"* कार्यक्रम न केवल राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहर को संरक्षित करेगा बल्कि स्थानीय उत्पादों, कृषि उपज, पारंपरिक खेलों एवं पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देकर आर्थिक सशक्तिकरण एवं रोजगार के नए अवसर भी प्रदान करेगा। इस पहल के माध्यम से राजस्थान के सभी जिलों के सतत एवं समावेशी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया जा रहा है।

शीशम का वृक्ष (***Dalbergia sissoo***)

- संबंधित विभाग का नाम - वन विभाग
- नोडल अधिकारी का नाम एवं पद- उप वन संरक्षक, खैरथल-तिजारा
- प्रस्तावना-राजस्थान विविध भौगोलिक परिस्थितियों, समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पारंपरिक हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पादों, कृषि उपज, वन संपदा एवं पर्यटन स्थलों से परिपूर्ण एक ऐतिहासिक राज्य है। यहां के प्रत्येक जिले की अपनी विशिष्ट पहचान है, जो उसकी पारिस्थितिकी, परंपरा, कारीगरी, खेल प्रतिभा एवं प्राकृतिक संसाधनों से जुड़ी हुई है। इसी को दृष्टिगत रखते हुए राज्य सरकार ने"पंच-गौरव"कार्यक्रम की परिकल्पना की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की विशिष्टताओं का संरक्षण, संवर्धन एवं समग्र विकास करना है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत राजस्थान के प्रत्येक जिले में पाँच प्रमुख क्षेत्रों के एक जिला-एक उत्पाद, एक जिला-एक उपज, एक जिला-एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला-एक खेल एवं एक जिला-एक पर्यटन स्थलकृका चयन किया जाएगा। इनके संवर्धन एवं प्रचार-प्रसार के लिए एक सुव्यवस्थित कार्ययोजना बनाई जाएगी, जिससे जिले की सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान को सशक्त किया जा सके। खैरथल-तिजारा जिले में शीशम (***Dalbergia sissoo***) को"पंच-गौरव" हेतु चयन किया गया है। यह बहुपयोगी वृक्ष जिले के कृषि क्षेत्रों, सड़क किनारों, गोचर एवं धार्मिक स्थलों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसकी पत्तियाँ औषधीय गुणों से भरपूर हैं।शाखाएँ खेतों की बाड़ एवं ईंधन के रूप में प्रयोग होती हैं, तथा इसका मजबूत तना ग्रामीण क्षेत्रों में टिम्बर के रूप में उपयोग किया जाता है। इस वृक्ष की टिम्बर से बहुकीमती फर्नीचर, दरवाजे व खिडकियों का निर्माण किया जाता है।"पंच-गौरव"कार्यक्रम न केवल राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक धरोहर को संरक्षित करेगाबल्कि स्थानीय उत्पादों, कृषि उपज, पारंपरिक खेलों एवं पर्यटन स्थलों को बढ़ावा देकर आर्थिक सशक्तिकरण एवं रोजगार के नए अवसर भी

प्रदान करेगा। इस पहल के माध्यम से राजस्थान के सभी जिलों के सतत एवं समावेशी विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया जा रहा है।

शीशम की जिले में उपलब्धता:

शीशम का वृक्ष जिले में बहुतायत से पाया जाने वाला वृक्ष है। यह वृक्ष सड़क मार्गों, कृषि भूमि, ओरण, गोचर, चारागाहों, सामुदायिक भवन परिसरों, धार्मिक परिसरों सहित सभी जगहों पर बहुतायत से पाया जाता है।

वर्तमान स्थिति –

- इस वृक्ष को सड़क किनारे वृक्षारोपण के लिए और शहरी वनीकरण के लिए अच्छी प्रजाति के रूप में माना जाता है। इसकी उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए वर्तमान में विभागीय नर्सरियों में विभागीय पौध तैयारी हेतु प्राप्त लक्ष्यों में से लगभग 40 प्रतिशत पौधे शीशम के पौधे तैयार किए जा रहे हैं।

जिले में पंच गौरव की अभिवृद्धि एवं सशक्तिकरण के लिए प्रस्ताव-

- वन विभाग के द्वारा शीशम के पौधों की तैयारी करना।
- वन विभाग की नर्सरियों को मजबूत करना ताकि पौधों की गुणवत्ता सुनिश्चित हो।
- सड़कों, स्कूलों, और सार्वजनिक स्थानों पर शीशम के वृक्षों का वृक्षारोपण करना।
- स्थानीय समुदायों को वृक्षारोपण अभियानों में शामिल करना ताकि समुदाय का स्वामित्व बना रहे।
- स्कूलों और कॉलेजों में शीशम वृक्ष के महत्व पर वर्कशॉप और सेमिनार आयोजित करना।
- सोशल मीडिया, पोस्टर, और बैनरों के माध्यम से जागरूकता फैलाना।

शीशम की पौध तैयारी

शीशम के फायदे:

शीशम के पेड़ के पत्ते और छाल कई तरह की बीमारियों में फायदेमंद होते हैं जैसे कि पाचन संबंधी समस्याएं मुंह के छालेऔर त्वचा की एलर्जी.

शीशम के पत्तों के फायदे:

पाचन में सुधार.

शीशम के पत्तों का सेवन पाचन शक्ति को बेहतर बनाता हैए गैसए अपच और एसिडिटी में आराम दिलाता है.

मुंह के रोगों के लिए:

शीशम के पत्ते एंटीबैक्टीरियल होते हैंए जो मुंह के हानिकारक बैक्टीरिया से लड़ते हैं और कैविटीए मसूड़ों की बीमारी और सांसों की बदबू से राहत दिलाते हैं.

त्वचा संबंधी समस्याओं के लिए:

शीशम के पत्तों का उपयोग त्वचा की एलर्जीए खुजली और जलन को कम करने में मदद करता है.

हार्मोनल असंतुलन में

शीशम की पत्तियां हार्मोनल उतार-चढ़ाव को नियंत्रित करने में सहायक होती हैं और मासिक धर्म के दौरान मूड स्विंग्स को कम करने में मदद करती हैं.

अन्य फायदे:

शीशम के पत्तों का उपयोग आंखों की लालिमाए चोट के घावए और मतली के उपचार में भी फायदेमंद हो सकता है.

शीशम के पेड़ के अन्य उपयोग:

औषधीय गुण:

शीशम के पेड़ की जड़ए छाल और लकड़ी का उपयोग आयुर्वेदिक दवाओं में किया जाता है

लकड़ी का उपयोग:

शीशम की लकड़ी मजबूत और टिकाऊ होती हैए जिसका उपयोग फर्नीचरए खेल के सामान और अन्य वस्तुओं को बनाने में किया जाता है

पर्यावरण के लिए:

शीशम के पेड़ को पर्यावरण के लिए भी फायदेमंद माना जाता हैए क्योंकि यह मिट्टी को बांधने और वायु प्रदूषण को कम करने में मदद करता है.

अपेक्षित परिणाम-

- खैरथल-तिजारा जिले में शीशम वृक्षों की संख्या में वृद्धि।
- स्थानीय लोगों में शीशम वृक्ष के प्रति जागरूकता बढाना।
- शीशम उत्पादों के बारे में जागरूकता के माध्यम से आर्थिक विकास और रोजगार के अवसर।
- पर्यावरणीय स्थिरता और जैव विविधता में सुधार।

निष्कर्ष-

- यह विस्तृत कार्ययोजना खैरथल-तिजारा जिले में शीशम वृक्ष के विकास और संरक्षण को बढ़ावा देने का लक्ष्य रखती है। स्थानीय समुदाय के सहयोग और जागरूकता के माध्यम सेयह कार्ययोजना क्षेत्र की पर्यावरणीय स्थिरता को बनाए रखने और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर बनाने में मदद करेगी।

जिला प्रशासन एवं आयोजना विभाग, खैरथल–तिजारा